}kn'k% ikB%

geUr&o.kue

(संस्कृत साहित्य में प्रायः कविगण ऋतुओं का वर्णन करते हैं किन्तु हेमन्त वर्णन उन्हें अधिक नहीं रूचता। आदि कवि इसके अपवाद हैं। उन्होंने सरल मधुर शैली में इस ऋतु का मोहक वर्णन किया है। प्रस्तुत पद्यांश 'वाल्मीकि–रामायणम्'' के अरण्यकाण्ड से उद्धृत है।)

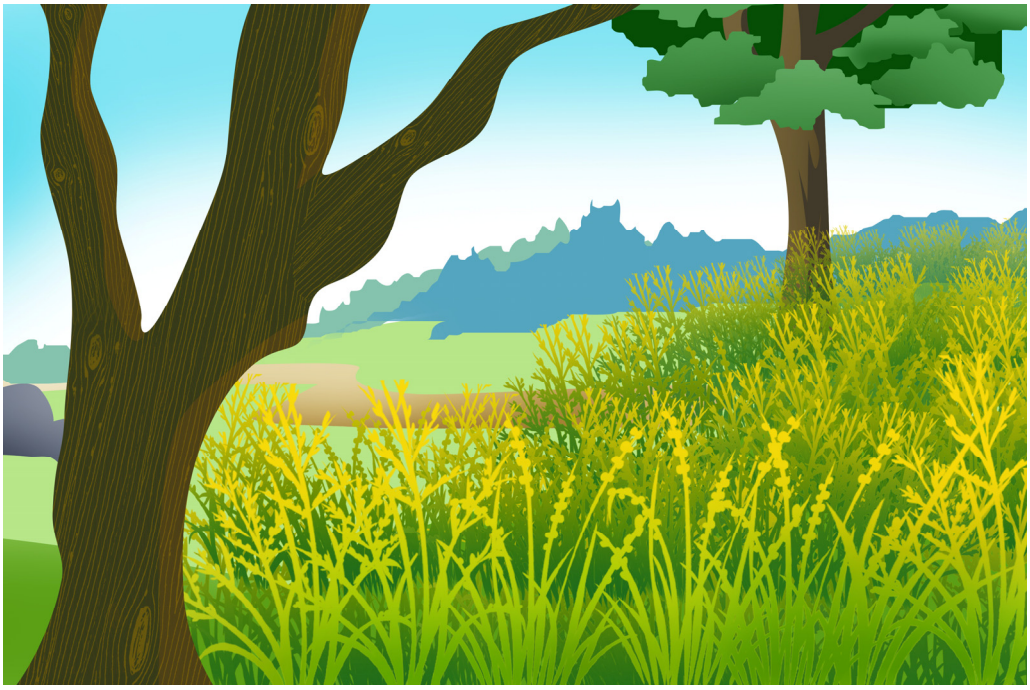

अयं स कालः सप्राप्तः प्रियो यस्ते प्रियंवद।
अलंकृत इवाभाति येन संवत्सरः शुभः ।। 1।।

नीहार परुषो लोकः, पृथिवी सस्यशालिनी।
जलान्यनुपभोग्यानि, सुभगो हव्यवाहनः।। 2।।

सेवमाने दृढं सूर्ये दिशमन्तकसेविताम्।
विहीनतिलकेव स्त्री नोत्तरा दिक्प्रकाशते।। 3।।

प्रकृत्या हिमकोशाढ्यो दूरसूर्यश्व साम्प्रतम्।
यथार्थनामा सुव्यक्तं हिमवान् हिमवान् गिरिः।। 4।।

अत्यन्तसुखसञ्चारा मध्याह्ने स्पृशतः सुखाः।
दिवसाः सुभागादित्याश्छायासलिलदुर्भगाः।। 5।।

मृदुसूर्याः सनीहाराः पटुशीताः समारुताः।
शून्यारण्या हिमध्वस्ता दिवसा भान्ति साम्प्रतम्।। 6।।

रविसंक्रान्त–सौभाग्यस्तुषारारुणशीतलः।
निः श्वासान्ध इवादर्शश्चन्द्रमा न प्रकाशते।। 7।।

ज्योत्स्ना तुषारमलिना पौर्णमास्यां न राजते।
सीतेव चातप श्यामा लक्ष्यते न तु शोभते।। 8।।

प्रकृत्या शीतलस्पर्शो हिमविद्धश्चसाम्प्रतम्।
प्रवाति पश्चिमो वायुः काले द्विगुणशीतलः।। 9।।

खर्जूरपुष्पाकृतिभिः शिरोभिः पूर्णतण्डुलैः।
शोभन्ते किञ्चदानम्राः शालयः कनकप्रभाः ।। 10।।

अवश्यायतमोन्नद्धा नीहारतमसा वृताः।।
प्रसुप्ता इव लक्ष्यन्ते विपुष्पा वनराजयः ।। 11।।

'kCnkFkk%

परुषः	=	कठोर
सुभगो	=	सुन्दर
हव्यवाहनः	=	अग्नि
संवत्सरः	=	वर्ष, साल
नीहारपरुषः	=	ओस के कारण अकड़ा हुआ।
अनुपभोग्यानि	=	उपयोग के अयोग्य
हिमविद्धः	=	बर्फ से जमा हुआ।
अन्तकसेविता दिक्	=	दक्षिण दिशा (दक्षिण दिशा अन्तक–यम की दिशा मानी जाती है।)
आदर्शः	=	शीशा, दर्पण
लक्ष्यते	=	दिखाई देता है।
शालयः	=	बड़े धान के पौधे
अवश्याय	=	ओस।

l ek l k%

सस्यशालिनी	=	सस्येन (अन्नेन) शालते (शोभते) इति।
हव्यवाहनः	=	हव्यं वाहतीति।
हिमकोशाढ्य	=	हिमस्य कोशः इति हिमकोशः तेन आढ्यः।
सनीहाराः	=	नीहारैः सह
अवश्याय–तमोन्नद्धाः	=	अवश्यायं च तमश्च इति अवश्यायतमसी ताभ्यां नद्धाः।

vH;kl%

1- vèkkfyf[krkuka iz'ukuke mÙkjkf.k laLÑrHkk"k;k fy[kr&

1. हेमन्तकाले किं सुखावहं भवति?
2. कीदृशाः दिवसाः भवन्ति हेमन्ते?
3. हेमन्त–ऋतौ शालयः कामवस्थां प्रतिपद्यन्ते?

2- vèkkfyf[krkuka okD;kuka laLd`rHkk"k;k vuqokna d#r &

1. इस ऋतु से संवत्सर शोभित होता है।
2. इस समय धूप अच्छी लगती है।
3. हेमन्त में उत्तर दिशा मलिन दिखाई देती है।
4. शीत के डर से पक्षी पानी में नहीं घुसते हैं।
5. इस समय वृक्ष सोये से दिखाई देते हैं।

3- vèkkfyf[krkuqx.k vH;kldk;Z d#r &

1. प्रथम श्लोक का अन्वय कीजिए।
2. चौथे श्लोक में उपमा को समझाइए।
3. इस वर्णन के आधार पर हेमन्त का वर्णन कीजिए।
4. आठवें श्लोक का अर्थ लिखिए।
5. कवि ने शालि धान के लिए कौन–कौन से विशेषण दिए हैं?

–––––000–––

R4ZP82